P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 Vol-I* Issue- VII* October - 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817

Remarking An Analisation
गाँधीवादी मूल्य और इक्कीसवीं सदी का भारत

अमितेन्द्र प्रताप सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
(अतिथि प्रवक्ता),
राजनीति विज्ञान विभाग,
इलाहाबाद डिग्री कालेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद, उ0 प्र0

सारांश

गाँधी जी आधुनिक भारत के लोकनायक एवं युग–निर्माता थे। आधुनिक भारत के निर्माताओं में उनका स्मरण एक ऐसे नेता के रूप में किया जाता है जिन्होंने न सिर्फ भारतीय राजनीति की धारा को मोड़कर देश को गुलामी के बंधन से मुक्ति दिलायी बल्कि पूरी दुनिया को सत्य, अहिंसा, शान्ति और सद्भाव के उन नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाया जो आज इक्कीसवीं सदी में भी उतने ही प्रासंगिक है जितने तब थे।

गाँधी जी सर्वोदयी समाज के पक्षधर थे। उन्होंने सत्य, अहिंसा पर आधारित आदर्श राज्य 'रामराज्य' की परिकल्पना की थी। गाँधी जी सादगी, श्रम की पवित्रता, मानवीय मूल्य तथा ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त के प्रवल समर्थक थे। वे सच्चे सत्याग्रही थे तथा साधनो की पवित्रता में विश्वास रखते थे। आज गाँधी जी के इन सिद्धान्तों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है। यह सभी गाँधीवादी सिद्धान्त वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय वैश्विक पटल पर अपनी प्रासंगिकता बनाये रखने में सफल है। अतः वर्तमान समय में आवश्यकता है कि गाँधी जी के इन समस्त सिद्धान्तों को दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा अपनाया जाये तथा भारतीय गौरव के प्रतीक गाँधीवाद को सुदृढ़ तथा प्रभावी बनाया जाये।

मुख्य शब्द : लोकनायक एवं युग निर्माता, सर्वतोन्मुखी उन्नति, ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त, सर्वोदयी समाज,सहिष्णुता, बाजारतंत्र, उपभोक्तावाद, सत्याग्रह, आत्मनियंत्रण, निष्क्रिय प्रतिरोध,युद्ध–संकुचित युग.

प्रस्तावना

गांधी जी आधुनिक भारत के लोकनायक एवं युग–निर्माता थे। आधुनिक भारत के निर्माताओं में उनका स्मरण एक ऐसे नेता के रूप में किया जाता है जिन्होंने न सिर्फ भारतीय राजनीति की धारा को मोड़कर देश को गुलामी के बंधन से मुक्ति दिलायी बल्कि पूरी दुनिया को सत्य, अहिंसा, शांति और सद्भाव के उन नैतिक मूल्येां का पाठ पढ़ाया जो आज इक्कीसवीं सदी में भी उतने ही प्रासंगिक है, जितने तब थे। गांधी जी एक ऐसे अद्भुत क्रांतिकारी थे जिसने अत्याचार और सामाजिक अन्याय के समक्ष कभी सिर नहीं झुकाया और न ही किसी के प्रति द्वेषपूर्ण भावना रखी। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था, जहाँ उन्होंने लोगों का मार्गदर्शन न किया हो। वास्तव में महात्मा गांधी का जीवन स्वयं एक दर्शन था।

गांधी जी भारत की सर्वतोन्मुखी उन्नति चाहते थे। राजनीतिक स्वतन्त्रता तो उनके निकट एक सोपान अथवा साधन मात्र थी। भारत में श्रेष्ठ एवं सुखी समाज की स्थापना के लिए उन्होंने सर्वोदय आन्दोलन का प्रवर्तन किया। सादगी, अहिंसा, श्रम की पवित्रता, मानवीय मूल्य तथा ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त उनके जीवन–दर्शन एवं उनकी कल्पना की आर्थिक व्यवस्था के प्रमुख अंग हैं। गांधीजी ने भौतिक शक्ति के ऊपर आत्मबल की प्रधानता में आस्था प्रकट की। उन्होंने सत्य और अंहिसा सम्बन्धी प्रयोग करके मनुष्य का आचरण बदलने का प्रयास किया।

गाँधी जी सर्वोदयी समाज के पक्षधर थे, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को समाज में अधिक से अधिक स्वतंत्रता एवं अवसर की समानता प्राप्त होगी। वे स्वयं कहते है : ''मैं एक ऐसे भारत का निर्माण करना चाहता हूँ, जहाँ एक सबसे गरीब व्यक्ति भी यह महसूस कर सके कि यह उसका अपना देश है, जिसमें उसकी बात को सुना जायेगा, उसकी बात का प्रभाव बढ़ेगा, जहाँ न कोई उच्च वर्ग होगा और न कोई निम्न वर्ग, जहाँ सभी धर्म एवं जाति के लोग सहिष्णुता से जी सकेंगे, जहाँ औरतों को भी पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त होंगे।[1] किन्तु गाँधी जी के उपर्युक्त विचारों के विपरीत दुनिया के बहुत बड़े हिस्से में आज भी लोग गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा एवं विपन्नता का जीवन जीने के लिए मजबूर हैं, वही दूसरी तरफ तेजी से वयस्क होती नयी पीढ़ी पर बाजारतंत्र, उपभोक्तावाद एवं पाश्चात्य अपसंस्कृतिकरण पूरी निरंकुशता से हावी है। सामाजिक न्याय एवं

नैतिक मूल्यों के मायने ही बदल गये है, और समाज में विषमता लगातार बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में गाँधीजी के सर्वोदयी समाज का आदर्श वर्तमान विश्व के लिए एक प्रकाश स्तम्भ के समान है।

सत्य और अहिंसा पर आधारित उन्होंने आदर्श राज्य 'रामराज्य' की परिकल्पना की थी। वह राज्य वस्तुतः मानवतावादी शासन–व्यवस्था होगी, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति इतना संयमशील एवं आत्मानुशासित होगा कि राज्य को कानून की आवश्यकता ही न रह जायेगी। उनकी मान्यता थी कि वह राज्य सर्वश्रेष्ठ है जो कम–से–कम राज (शासन) करे।'' गाँधी जी ने आदर्श समाज के निर्माण के लिए विकेन्द्रीकण की नीति का प्रतिपादन किया। शासन के क्षेत्र में ग्राम–पंचायत व्यवस्था तथा अर्थ के क्षेत्र में कुटीर उद्योग उन्हें मान्य थे। चरखा उनकी विकेन्द्रीकृत आर्थिक व्यवस्था का प्रतीक है। इतना ही नहीं, गाँधी जी हिन्दू समाज की वर्ग–व्यवस्था के अनुरूप वंशानुगत उद्यम के पक्ष में थे। उनका मत था कि इस सिद्धान्त का पालन करने से आर्थिक जीवन में प्रतिस्पर्द्धा का भाव नष्ट होता है तथा समाज में स्थिरता आती है। इस व्यवस्था का एक अतिरिक्त लाभ यह होता है कि बच्चों को अपने उद्यम का स्वाभाविक प्रशिक्षण प्राप्त होता है और तकनीकी प्रगति होती है। समाज में शोषण समाप्त करने के लिए गाँधी जी आस्तेय एवं ट्रस्टीशिप के सिद्धान्तों की आवश्यकता पर बल देते हैं। उनकी मान्यता थी कि सच्ची सभ्यता, जान–बूझकर आवश्यकताओं को घटाने में है, उन्हें बढ़ाने में नहीं। उनकी यह भी धारणा थी कि हृदय परिवर्तन की नीति अपनाकर हम पूँजीपतियों को इस बात के लिए राजी कर सकते हैं कि वे अपनी सम्पत्ति को समाजोपयोगी कार्यो में लगायें। सच्चा समाजवाद, समाजधर्मी हो सकता है। समान–वितरण की प्रक्रिया ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त द्वारा ही सम्भव है।

गाँधी जी सच्चे सत्याग्रही हैं, वे सत्य को ही परम आदर्श एवं सर्वोच्च मूल्य मानते हैं। सत्य रूपी साध्य की प्राप्ति के लिए गाँधीजी ने अहिंसा को साधन के रूप में अपनाया है और इसी अहिंसा के पालन के लिए उन्होंने जो ढंग विकसित किया, उसे वे सत्याग्रह नाम देते हैं। सत्याग्रह सत्य के प्रति पूर्ण निष्ठा है, सत्य का दामन हर स्थिति में पकड़े रहना है, इसमें किसी भी प्रकार की असमर्थता के लिए कोई स्थान नहीं है। सत्याग्रह इस दृढ़ विश्वास के साथ अग्रसर होता है कि ईश्वर एक है, तथा वहीं हर मनुष्य, हर जीव, हर सत्ता में विद्यमान है। हम जिसका विरोध करते हैं उसमें भी उसी ईश्वर का वास है जो हममें है। इसी कारण सत्याग्रह सर्वव्यापी प्रेम में बदल जाता है, जिसमें हर व्यक्ति दूसरों के अन्तःस्थित सत्य का सम्मान करता है। इस रूप में गाँधी जी का सत्याग्रह का विचार उपनिषदों में वर्णित अभेददर्शी[2] की अवधारण के अत्यन्त निकट है। वास्तव में सभी प्रकार के अत्याचार, अन्याय अथवा हिंसा इस कारण होते हैं कि वहाँ सत्य की उपेक्षा हो जाती, सत्य का त्याग ही इनके उत्पन्न होने का कारण है। अतः यदि हम विश्व में व्याप्त हिंसा अन्याय आदि का सामना हिंसा–अन्याय से ही करते हैं तो हम भी असत्य का ही साथ दे रहे हैं, हमें सत्य को अपनाना होगा, यही सत्याग्रह की सार्थकता हैं।

गाँधी जी साधनों की पवित्रता में विश्वास करते थे। वे साधन और साध्य को अविभाज्य मानते थे। गाँधीवाद मैकियावली के इस नैतिक सिद्धान्त– 'साध्य से ही साधन का औचित्य निश्चित हो जाता है', के कायल थे। उनका मानना था कि उचित साध्य के लिए उचित साधन को ही अपनाना चाहिए। गाँधी जी ने साधनों की तुलना बीज से की और साध्य की तुलना एक वृक्ष से की। साधन और साध्य में सह–सम्बन्ध है जो बीज और और वृक्ष में है। वे व्यक्तिगत जीवन और सार्वजनिक जीवन के लिए नैतिकता की एक ही पद्धति में विश्वास करते थे। राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में नैतिकता को समाहित कर देना गाँधी के दर्शन की सुदृढ़ विशेषता थी। सत्य, अहिंसा और साधनों की पवित्रता को वे जहाँ व्यक्तिगत जीवन के लिए अनिवार्य समझते थे, वहाँ सामाजिक जीवन के लिए भी वे इन्हें अपरिहार्य मानते थे। राजनीति को वे नैतिकता से अलग करके नहीं देखते थे। उनकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं था। वे जो कुछ कहते थे उसे करते भी थे।

गाँधी जी साध्य एवं उसकी प्राप्ति के साधन, दोनो की पवित्रता एवं शुचिता में दृढ़ विश्वास रखते हैं। उनकी स्पष्ट मान्यता है कि पवित्र से पवित्र साध्य की प्राप्ति के लिए भी यदि अनुचित साधन का उपयोग किया जाता है तो वह साध्य को ही नष्ट कर देता है। यही कारण है कि गाँधी जी ने राष्ट्र की स्वतंत्रता के आन्दोलन में सदैव अहिंसा का पालन करने की शिक्षा दी। उनका स्पष्ट मत है कि ''हिंसा पर किसी सर्जनात्मकता को शाश्वत रूप में स्थापित नहीं किया जा सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि यदि शुभ उद्देश्य तथा कल्याण के अभिप्राय से भी हिंसा के प्रयोग द्वारा अत्याचारी या बेइमानों को हटाया गया है, तो उस हिंसा के प्रयोग के कारण वह समाज स्वयं भी उन्हीं कुरीतियों एवं अशुभ रूपों का शिकार हो गया है, जिन्हें दूर करने के लिए उन्होंने हिंसा का सहारा लिया था''।[3] गाँधीजी के इन विचारों की प्रासंगिकता का प्रमाण हमें अफगानिस्तान, लीबिया, ईराक, पाकिस्तान आदि में व्याप्त हिंसा के रूप में प्रत्यक्षतः दिखायी देता है।

राजनीति में नैतिक साधनों द्वारा दुराचार एवं उत्पीड़न का विरोध करने के लिए गाँधी जी ने सत्याग्रह का मार्ग अपनाया। उनका विचार था कि अन्याय तभी फलता–फूलता है जब कि हम उसके साथ सहयोग करते हैं। यदि हम इसके साथ असहयोग करें तो यह अधिक दिनों तक जिन्दा नहीं रह सकता। सत्याग्रही का उद्देश्य अपने विरोधी का नाश करना न होकर उसमें मानसिक परिवर्तन लाना होना चाहिए जिससे वह अन्याय का मार्ग छोड़ दे। उनके अनुसार, मनुष्य के अन्तस्तल में स्थित सत्य–विषयक गुप्त निश्चय ही सत्याग्रह की बुनियाद है। सत्य को पहचानने के लिए अन्तःकरण की शुद्धता आवश्यक होती है। सत्याग्रह अन्तःकरण की आवाज को बुलन्द करता है। जब सत्याग्राही का विरोधी कोई व्यक्ति–विशेष नहीं अपतु एक राष्ट्र, जाति या व्यवस्था

होती है, तब ऐसा अन्तर्नाद उनके किसी विशेष चरित्रवान व्यक्ति को पहले सुनायी पड़ता है और उसका हृदय परिवर्तन पहले होता है। वह व्यक्ति फिर अपने भाईयों को वह आवाज सुनाता है और सत्य का पक्ष लेकर उनका विरोध भी करता है। सत्याग्रही स्वयं कष्ट उठाकर अपने विरोधी के कुकृत्य या अनुचित कदम को क्षमा कर देता है। वस्तुतः किसी को दण्डित करने की अपेक्षा क्षमा करने में अधिक साहस एवं धैर्य की आवश्यकता होती है।

गाँधीजी सत्य को समस्त नैतिक मूल्यों का उद्‌गम मानते हैं। उन्होंने सत्य और अहिंसा का सैद्धान्तिक समर्थन मात्र नही किया है, अपितु अपने व्यावहारिक जीवन में भी अपनाया है। आत्मनियंत्रण उनका संबल था और सत्य एवं अहिंसा उनके मूल हथियार थे, जिनकी बदौलत आज हम एक संप्रभु देश में स्वतंत्र रूप से सांस ले रहे हैं। अगर आज विश्व हमारे देश को 'गाँधी के देश' के रूप में पहचानता है तो इसके पीछे उनके सत्याग्रह और अहिंसा की ताकत ही है। वास्तव में आतंकवाद एवं हिसा से त्रस्त इस विश्व को गाँधी की तरफ लौटना ही होगा जहाँ अहिंसा ही परम धर्म है, सत्य ही परम मूल्य है।[4] किन्तु गाँधी जी का सत्याग्रह निष्क्रिय प्रतिरोध अथवा कायरता पूर्वक समर्पण नहीं है। यह विवश करने की विधि भी नहीं है। वस्तुतः सत्याग्रह हृदय परिवर्तन की विधि है, जिसका आधार असीम प्रेम एवं असीम धैर्य है। गाँधी जी का सत्याग्रही सत्य के लिए अपना उत्सर्ग करता है, स्वेच्छा से स्वयं को कष्ट में डालता है। वह कष्ट झेलकर भी विपक्षी को प्रभावित करता है, जिससे वह अपने अन्दर विद्यमान अनिवार्य 'शुभत्व' की आवाज को सुन सके और उसकी दृष्टि परिवर्तित हो सके। इसीलिए गाँधी जी कहते हैं ''निर्माण की प्रवृत्ति प्रभाव उत्पन्न करने से जागती है और प्रभाव दूसरों को दुःख पहुँचा कर उत्पन्न नहीं होता बल्कि सलीब पर लटक जाने से उत्पन्न होता है।[5]

गाँधी जी वैसे तो हिन्दू धर्म के अनन्य उपासक थे और राम नाम में उनका अगाध विश्वास था, परन्तु सभी धर्मो में उन्हें एक ही सत्य के दर्शन होते थे। वे धर्म परिवर्तन के विरूद्ध थे। उनके विचार में सच्चा धर्म सभी धर्मो के प्रति आदर–भाव जगाता है, उनकी आलोचना करना नहीं सिखाता। मानव प्रकृति मे धर्म एक स्थायी तत्व है जो पूर्ण अभिव्यक्ति प्राप्त करने के लिए आत्मा को अशान्त बना देता है और तब तक उसे चैन नहीं लेने देता जब तक कि परमात्मा और आत्मा का साक्षात्कार न हो जाय। गाँधी जी सभी धर्मो की समानता एवं एकता में विश्वास करते थे। उन्हें मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और गीता, कुरान, बाइबिल में एक ही ईश्वर नजर आता था। उन्होंने ईश्वर के स्वरूप का विवेचन इस प्रकार किया कि नास्तिक भी उसके अस्तित्व से इन्कार नहीं कर सकते। इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा ''जो कहते हैं कि ईश्वर प्रेम है,मैं उनसे कहूँगा कि ईश्वर प्रेम है। लेकिन अपने अन्तस्तल की गहराइयों में मैं कहा करता था कि ईश्वर यद्यपि प्रेम हो सकता है, पर सबसे पहले ईश्वर सत्य है। यदि मानव–वाणी के लिए ईश्वर का पूर्णतम वर्णन करना सम्भव है, तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि मेरे लिए ईश्वर सत्य है– मैंने सत्य के सम्बन्ध में दो अर्थ कभी नहीं पाया और नास्तिकों तक ने सत्य की शक्ति या आवश्यकता पर कभी शंका नहीं की। लेकिन सत्यान्वेषण की अपनी उत्कण्ठा से ये नास्तिक अपने दृष्टिकोण से ईश्वर के अस्तित्व से भी इन्कार करने में नहीं हिचके और इसी तर्क के आधार पर मैंने पाया कि ईश्वर सत्य है, कहने के बजाय मुझे कहना चाहिए कि सत्य ही ईश्वर है।'' गाँधी जी की धर्म के प्रति आस्था पुराणपन्थी नहीं थी। हिन्दुओं में प्रचलित अस्पृश्यता की बुराई का उन्होंने डटकर विरोध किया। गाँधी जी भाग्यवादी भी नहीं थे, कर्म के सिद्धान्त में उनका विश्वास था और वे यह मानते थे कि अनुचित कामों के लिए मनुष्य को सजा अवश्य मिलती है। लेकिन उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का विधाता है। गीता के निष्काम कर्म को वे अपना आदर्श मानते थे। यदि यह कहा जाय कि वे एक महान कर्मयोगी थे, तो अत्युक्ति न होगी।

आज गाँधी जी के सिद्धान्तों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है, परन्तु इसके साथ ही उनका कहना था कि कुछ लोग उनके सिद्धान्तों के प्रति शंकालु और संदेहशील होकर यहाँ तक कह बैठते हैं कि गाँधीवादी विचारधारा अब सन्दर्भ के बाहर की वस्तु हो गयी है। उसके द्वारा हमारे समाज के हित साधन की कोई सम्भावना नहीं है, उसे तो कहीं किसी गहरे गड्‌ढे में दफना दिया जाना चाहिए। इसी मनोवृत्ति को लक्ष्य करते हुए यह लोकोक्ति चल पड़ी है कि ''मजबूरी का नाम महात्मा गाँधी''। परन्तु गाँधीवाद को ठीक तरह एवं गम्भीरतापूर्वक समझने का प्रयत्न बहुत कम लोगों ने किया है। हम विदेशों की बात न करके भारत के सन्दर्भ में यह कह सकते हैं कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त गाँधीवादी विचारधारा के प्रति बहुत कुछ उपेक्षा का वातावरण बन गया था और उसको व्यवहार में लाने का बहुत कम प्रयत्न किया गया है। गाँधीवाद हमें जीवन के कुछ मूल्य ही नहीं देता है, बल्कि व्यावहारिक जीवन का तर्कपूर्ण एवं न्यायसंगत मार्ग भी बताता है।

गाँधीवाद सत्यानुभव पर आधारित है तो जीवनमात्र में शुद्ध–बुद्ध आत्मा का दर्शन करता है तथा जीवन में आध्यात्मिकता एवं नैतिकता को प्रमुख स्थान देता है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन निजी सत्य है और उसको जीवन में ढालना उसका धर्म है। आत्मानुभूत सत्य के अनुसार आचरण करना मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। इस प्रकार गाँधीवाद हमें निर्भय होकर धर्माचरण का सन्देश देता है। आत्मविकास के लिए मानव सदा से भय से मुक्ति और स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए सघंर्ष करता आया है। हम यदि समझते हैं कि जीवन में प्रेम, विश्व–मैत्री, अपरिग्रह, निर्भयता, मानवता, स्वतन्त्रता आदि उदात्त गुण है तो हम सहज ही स्वीकार करते हैं कि विश्व को, विशेषकर भारत को गाँधीवाद की आवश्यकता है। युद्ध–संकुलित इस युग में प्रत्येक देश विश्व शान्ति का स्वप्न देखता है। इस स्वप्न को साकार करने का एक ही रास्ता है कि गाँधीवादी अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही हम न्यूक्लियर अस्त्रों तथा उनके द्वारा जनित आतंक से मुक्त हो सकते हैं। वर्तमान युग में

प्रत्येक राष्ट्र निरस्त्रीकरण की बात तो करता है, परन्तु उसके पीछे राजनीतिक दाँव–पेंच रखता है। राजनीति की भाषा न बोलकर यदि हमारे कर्णधार प्रेम के मार्ग पर चलें तो हमारी अनेक समस्यायें सहज ही सुलझ सकती है।

गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सत्य व अहिंसा के मार्ग पर चलकर मार्टिन लूथर किंग, नीग्रो समाज को अपने मौलिक अधिकार दिलाने में सफल हुए। नेल्सन मण्डेला 26 वर्षो तक जेल में रहने के उपरान्त दक्षिण अफ्रीका में लोकतन्त्रीय सरकार बनाने में सफल हुए हैं। स्पष्ट है कि गाँधीवाद द्वारा लोकतन्त्र सुरक्षित रखा जा सकता है। व्यक्ति को महत्त्व प्रदान करके ही हम लोकतन्त्र का नाम लेने के अधिकारी बन सकते हैं। सत्य और अहिंसा से रहित लोकतन्त्र का भविष्य सर्वथा आरक्षित ही समझना चाहिए।

आज की भौतिक एवं ऐहिक आवश्यकतापूर्ति के जीवन को देखकर हम समझ बैठे हैं कि भौतिक उन्नति ही हमारे जीवन का सर्वस्व है, परन्तु हमें यह भी स्मरण कर लेना चाहिए कि भौतिक दृष्टि से सर्वाधिक उन्नत एवं समृद्ध देशों के निवासी जीवन में घुटन और बेचैनी अनुभव करने लगे हैं। साम्यवाद और पूँजीवाद सदृश भौतिकवादी जीवन–पद्धतियों से ऊबकर वहाँ बौद्धिक व्यक्तियों ने 'विश्व संस्कृति सम्मेलन' की स्थापना की।

गाँधी जी ने अंग्रेजी शासन के विरूद्व नीति–नैतिकता समन्वित अहिंसा की नीति को आधार बनाकर आन्दोलन चलाया, उन्होंने अंग्रेजी शासन का विरोध किया और अंग्रेजों के प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार किया। विशेषता यह रही कि सद्भाव की नीति पर चलते हुए उन्होंने सफलता प्राप्त की तथा भारत को स्वतंत्रता दिला दी। यह एक ऐसा प्रयोग था जिसे देखकर विश्व चकित रह गया है। विश्व–कल्याण के प्रति जागरूक विचारक यह अनुभव करते हैं कि गाँधीवादी सिद्धान्तों को अपनाकर ही हम समस्त अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझा सकते हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने विश्व शान्ति के लिए जिस 'पंचशील' सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था, वह गाँधीवादी चिन्तन का ही पूर्व रूप है, जो हमें बुद्ध और महावीर की विचार परम्परा से प्राप्त हुआ है। इस सिद्धान्त को क्या हम राष्ट्रीय स्तर पर प्रयोग में नहीं ला सकते हैं?

गाँधी जी की परिकल्पना का 'रामराज्य' आधुनिक लोक–कल्याणकारी राज्य का आदर्श रूप प्रस्तुत करता है। उनका सर्वोदय आन्दोलन, सर्वतोन्मुखी उन्नति का सन्देश देता है। वह सप्तपर्णी उन्नति का अग्रदूत है– स्वास्थ्य, सम्पत्ति, साहित्य, सभ्यता, संस्कृति, सद्बुद्धि और सद्भावना। ऐसा कौन–सा देश अथवा काल होगा जहाँ सर्वोदयी सुख–समृद्धि को स्पर्द्धा की दृष्टि से नहीं देखा जायेगा। गाँधी जी का कहना था कि हमारे उद्योग, मानव प्रधान होने चाहिए, न कि मशीन प्रधान। वह मानव को व्यवसायिक इकाई न मानकर आध्यात्मिक प्राणी मानते थे। उनका स्पष्ट मत था कि मशीनों के कारण उत्पादन की मात्रा तो बढ़ती है, परन्तु मानव के श्रम का महत्त्व कम होता है। औद्योगिक विकेन्द्रीकरण को लक्ष्य करके गाँधी जी ने ग्रामोत्थान का आन्दोलन चलाया और कुटीर उद्योग–धन्धों वाली अर्थनीति पर बल दिया। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार उत्पादन करे तो आर्थिक शोषण एवं बेकारी की समस्याओं का अन्त स्वयंमेव हो जाये। जापान का उदाहरण हमारे सामने है। वहाँ प्रत्येक व्यक्ति उत्पादन करता है। परिणामतः वह समस्त औद्योगिक जगत् पर छा गया है और एक समृद्ध देश बन गया है। यदि हमारा प्रत्येक गाँव आर्थिक दृष्टि से एक स्वतन्त्र इकाई हो तथा हमारी ग्राम पंचायतें शक्तिशाली हों, तो हमारा देश वर्ग–सघर्ष, तालाबन्दी, हड़ताल आदि अनेक अभिशापों से सहज ही छुटकारा पा जाये। श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा प्रवर्तित बीस सूत्रीय कार्यक्रम की जड़ें, गाँधीवादी चिन्तनधारा से ही रस ग्रहण करती हैं।

यदि हम गाँधी जी के आर्थिक विचारों का मंथन करें तो हम पायेंगे कि उनकी कुछ अन्तर्दृष्टियाँ आज भी पूर्णतः प्रासंगिक हैं। आज अंधाधुंध तकनीकीकरण के द्वारा पैदा किया गया पर्यावरण विनाश मानव जाति के लिये बहुत बड़ा खतरा बन गया है, साथ ही साथ इसने सामाजिक विघटन को भी बढ़ावा दिया है। यद्यपि आज भूमंडलीकरण के दौर में हम मशीनीकरण को एक ओर नहीं कर सकते, किन्तु यदि विशाल एवं निरंतर बढ़ती हुई श्रमशक्ति को बेरोजगारी से बचाना है तो हमें गाँधी जी के विचारों के अनुरूप मशीनीकरण को विवेकपूर्ण तरीके से अपनाना होगा। ऐसा नहीं है कि गाँधी जी महज चरखा और स्वदेशी पर बल देते थे तथा औद्योगीकरण के विरोधी थे। वरन वे स्वयं कहते हैं कि मेरी कल्पना है कि बिजली, जहाज निर्माण, लोहे के कारखानों, यंत्र निर्माण और ऐसे ही अन्य उद्योगों का अस्तित्व ग्रामीण शिल्प के साथ–साथ चले।[6] आज अमर्त्य सेन जैसे अर्थशास्त्री अपने कल्याणकारी अर्थशास्त्र के माध्यम से वस्तुतः गाँधी जी के सहज आर्थिक चिंतन की उपादेयता को ही स्पष्ट करते हैं।

गाँधीवाद, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हृदय परिवर्तन द्वारा स्थायी विकास का मार्ग दिखाता है और मानवीय मूल्य के आधार पर प्रत्येक समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। गाँधीवाद नवीन व्यक्ति और नवीन समाज के निर्माण का जीवन–दर्शन है। मार्क्सवादी खूनी क्रान्ति का विकल्प हमें गांधीवादी विकासशील क्रान्ति के मार्ग में उपलब्ध होता है। मानव की एकता एवं समानता का सन्देश प्रदान करने वाली गाँधीवादी जीवन–पद्धति हमारा कल्याण कर सकती है। गाँधीवादी सिद्धान्तों एवं आदर्शो पर चलकर ही विश्व शांति का स्वप्न साकार किया जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य गाँधीवादी मूल्यों का अध्ययन करना तथा उनका परीक्षण करके यह देखना कि यह मूल्य वर्तमान भारतीय समाज पर कितना प्रभाव डालते है। इस अध्ययन का उद्देश्य गाँधीवादी मूल्यों का 21वीं सदी के भारतीय समाज के संदर्भ में प्रासंगिकता का अवलोकन करना है। इस अध्ययन द्वारा गाँधी जी द्वारा दिये गये विभिन्न सिद्धान्तों–सादगी, अहिंसा, श्रम की पवित्रता, मानवीय मूल्य तथा ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त का भारतीय संदर्भ में अध्ययन कर उनकी उपयोगिता को

पहचानने की कोशिश की गयी है। इस अध्ययन द्वारा वर्तमान भारतीय समस्या गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा तथा विपन्नता को समाप्त करने में गाँधी जी के सिद्धान्त कितना उपयोगी है यह स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है। अतः कहा जा सकता है कि इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वर्तमान भारतीय समाज की समस्याओं के निराकरण में गाँधी जी द्वारा दिये गये सिद्धान्त कितना कारगर है, को स्पष्ट करना है।

निष्कर्ष

गाँधीवाद का भारतीय जन–जीवन एवं शासन पर अमिट प्रभाव पड़ा है। राष्ट्रपिता के रूप में हम उन्हें केवल याद ही नहीं करते, उनके आदर्शो को अमल में लाने के भी कुछ ठोस प्रयत्न किये गये हैं। गाँधीजी के आदर्शो के अनुरूप ही संविधान में अस्पृश्यता को समाप्त करने का प्रावधान किया गया है। दलितों एवं पिछड़ी जातियों के उत्थान हेतु सरकार द्वारा उठाये गये कदम भी गाँधीवाद के प्रभाव के ही प्रतिफल हैं। ग्राम स्वराज्य की भावना को स्वीकार करते हुए पंचायती राज व्यवस्था को लागू किया गया हैं खादी एवं ग्रामोद्योग को प्रोत्साहन देने हेतु करोड़ों रूपये खर्च किये गये हैं यद्यपि इस क्षेत्र में अधिक उन्नति नहीं हुई है। लेकिन जहाँ गाँधीवाद को बढ़ावा मिल रहा है, वही लोग इसकी जड़ खोदने में भी लगे हुए हैं। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम गाँधी जी में तो आस्था रखते हैं, परन्तु गाँधीवाद में हमारी आस्था डगमगा रही है। इस देश में वह प्रवृत्ति पनप रही है कि लोग गाँधी जी का नाम तो जपते हैं, परन्तु उन आदर्शो की अवहेलना करते हैं जिन्हें गाँधी जी अपरिहार्य मानते थे। हिंसा के प्रयोग को वे स्वाधीनता आन्दोलन को चलाने के लिए भी अनुचित समझते थे। लेकिन उनके अनुयायियों में सत्तालोलुप्ता अथवा व्यक्तिगत विद्वेष इतना बढ़ गया है कि वे समुचित रूप से चुनी हुई जनतान्त्रिक सरकारों का हिंसात्मक आन्दोलनों द्वारा तख्ता उलटने से बाज नहीं आ रहे हैं। साधनों की पवित्रता की दुहाई हर कोई देता है, परन्तु सत्तारूढ़ एवं विरोधी दलों में हर हथकण्डे अपनाकर चुनाव जीतने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। गाँधीवाद का ही मान रखने के लिए संविधान के नीति निर्देशक सिद्धान्तों में कहा गया है कि राज्य दवा के अतिरिक्त अन्य मादक वस्तुओं के प्रयोग का निषेध करने का प्रयत्न करेगा। परन्तु व्यवहार में हुआ यह कि जिन राज्यों ने पहले मद्य–निषेध लागू किया था, उन्होंने भी अपना राजस्व बढ़ाने के उद्देश्य से इसे समाप्त कर दिया। हम मद्य–निषेध का प्रचार भी करते हैं और शराब की दुकानें भी बढ़ाते जा रहे हैं। उचित यही होगा कि जहाँ गाँधीवाद को अव्यावहारिक समझा जाता है, वहाँ गांधी का नाम लेकर उन्हें बदनाम न किया जाय। और जहाँ गाँधीवाद को उपयुक्त पाया जाता है, वहाँ उस पर तन–मन–धन से अमल किया जाय। यदि उनके आदर्शो को मन, वचन और कर्म से भारतवासी ही नहीं अपनायेंगे तो वे किस मुँह से विश्व को गाँधीवाद का संदेश दे सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. के0 दामोदरन, भारतीय चिंतन परम्परा, पृष्ठ 472
2. यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति। सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुंप्सते।।6।। ईशावास्योपनिषद।
3. गाँधी मो0 क0, हरिजन, 1939 ई0 ।
4. महाभारत के महाप्रस्थानिक पर्व में वर्णित श्लोक– अहिंसा परमो धर्मस्तथा हिंसा परत्तपः। अहिंसा परमं सत्यं यतो धर्मः प्रवर्तते।।
5. गाँधी मो0 क0 टुवर्डस नॉन वाइलेटेड पॉलिटिक्स, तंजौर सर्वोदय– 1969
6. गाँधी, मो0 क0 हिन्द स्वराज, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, पृष्ठ 88–91